15

घड़ि-घड़ि पल-पल छिन-छिन निश-दिन,
प्रभुजी का सुमिरन कर ले रे ॥टेक॥

प्रभु सुमिरेतैं पाप कटत है, जनम-मरन दुख हर लेरे ॥1॥
मन-वच-काय लगाय चरन चित, ज्ञान हियेबिच धर लेरे ॥2॥
'दौलतराम' धर्म नौका चढ़ि, भव-सागर तैं तिर लेरे ॥3॥

परमेष्ठी वन्दना

पंच परम परमेष्ठी देखे----------।
हृदय हर्षित होता है, आनन्द उल्लसित होता है।
हो ऽ ऽ ऽ सम्यग्दर्शन होता है॥टेक॥
दर्श-ज्ञान-सुख-वीर्य स्वरूपी गुण अनन्त के धारी हैं।
जग को मुक्तिमार्ग बताते, निज चैतन्य विहारी हैं॥
मोक्षमार्ग के नेता देखे, विश्व तत्त्व के ज्ञाता देखे।
हृदय हर्षित होता है---------- ॥१॥
द्रव्य-भाव-नोकर्म रहित, जो सिद्धालय के वासी हैं।
आतम को प्रतिबिम्बित करते, अजर अमर अविनाशी हैं॥
शाश्वत सुख के भोगी देखे, योगरहित निजयोगी देखे।
हृदय हर्षित होता है---------- ॥२॥
साधु संघ के अनुशासक जो, धर्मतीर्थ के नायक हैं।
निज-पर के हितकारी गुरुवर, देव-धर्म परिचायक हैं॥
गुण छत्तीस सुपालक देखे, मुक्तिमार्ग संचालक देखे।
हृदय हर्षित होता है---------- ॥३॥
जिनवाणी को हृदयंगम कर, शुद्धातम रस पीते हैं।
द्वादशांग के धारक मुनिवर, ज्ञानानन्द में जीते हैं॥
द्रव्य-भाव श्रुत धारी देखे, बीस-पाँच गुणधारी देखे।
हृदय हर्षित होता है---------- ॥४॥
निजस्वभाव साधनरत साधु, परम दिगम्बर वनवासी।
सहज शुद्ध चैतन्यराजमय, निजपरिणति के अभिलाषी॥
चलते-फिरते सिद्धप्रभु देखे, बीस-आठ गुणमय विभु देखे।
हृदय हर्षित होता है---------- ॥५॥

मां जिनवाणी ज्ञायक बताय दियो रे
आनंद भयो भारी आनंद भयो रे।। टेक ।।
मैं भींग गयो भींग गयो भींग गयो रे ।।

काल अनादि से भव भव भ्रमता
जनम जनम के बहु दुख सहता
अब समझा शुद्धातम दुख भाग गयो रे।
आनंद भयो.....रे।।

कोई कामना रही न बाकी,
निज महिमा सर्वोत्तम आंकी।
अब चैतन्य चैतन्य भास रहो रे।
आनंद भयो.....रे।।

षट द्रव्यों के धर्म निराले
चेतन तुम हो जानन हारे
व्यर्थ चिंता थी छूटी आनंद भयो रे।
आनंद भयो.....रे।।

પંચ પરમેષ્ઠીની આરતી

જય જય આરતી પંચ પરમેષ્ઠી, ચેતનરામી નમું તુજ સ્વામી,
પહેલી આરતી મિથ્યા ટાળે, સમ્યગ્જ્ઞાન પ્રકાશ નિહાળે. જયજય૦
બીજી આરતી બીજ ઉગાડે, દ્વંદ્વાતીતપણાને પમાડે. જયજય૦
ત્રીજી આરતી ત્રિરત્ન શુદ્ધિ, થાએ સહેજે આત્મસ્વરૂપી. જયજય૦
ચોથી આરતી અનંત ચતુષ્ટય, પરિણામે કૃતકૃત્યસ્વરૂપ. જયજય૦
પંચમી આરતી પંચ પરમેષ્ઠી, શુદ્ધ સ્વભાવ સહજ લહે અરથી. જયજય૦